आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना

हिन्दी साहित्य के महान आलोचक, निबंधकार, साहित्य इतिहास लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म 1884 ई में पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। बचपन से ही अध्ययन के प्रति लगनशील शुक्ल ने वकालत की पढ़ाई की लेकिन उनकी रूचि साहित्य में थी। उन्होंने विश्व के अनेक साहित्यों का अध्ययन किया। 1908 ईo में उन्हें काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी शब्दसागर के सहायक संपादक का कार्य भार मिला जिसे उन्होंने सफलता पूर्वक पूरा किया। उन्होंने 1920 ईo में हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा।

रचनाएं- हिन्दी साहित्य का इतिहास, चिंतामणि, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, मलिक मुहम्मद जायसी, गोस्वामी तुलसीदास, भ्रमरगीत सार, रसमीमांसा आदि।

शुक्ल का काव्य संबंधी आलोचना दृष्टिकोण

1. शुल्क रसवादी आचार्य थे।

2. शुक्ल जी कविता का मूल उद्देश्य रसानुभूति के साथ ही यह भी मानते थें कि काव्य के द्वारा हमारे मनोभावों का परिष्कार होता है।

3. शुक्ल जी कविता का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं मानते।

4. उनकी मान्यता है कि कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाकर हमें मनुष्यता की उच्च भूमि पर ले जाती है।

5. उनकी धारणा है कि कविता केवल अर्थ ग्रहण नहीं करती, वह विंब ग्रहण भी कराती है।

6. शुक्ल जी कविता में जानबूझकर चमत्कार उत्पन्न करने के लिए किए गए साधनों का विरोध करते है।

7. शुक्ल जी काव्य में संप्रेषण पर आधिक बल देते हैं एक की अनुभूति को दूसरे हृदय तक पहुंचाना ही कला का लक्ष्य है।

8. शुक्ल जी काव्य में प्रकृति चित्रण को प्रमुख स्थान देते हैं । वह सच्चा कवि उसे मानते हैं जिसने प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों रूपो का चित्रण करे।